P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारतीय संस्कृति में लोक गीतों का महत्व

श्वेता खरे
शोधार्थी,
संगीत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उ.प्र., भारत

सारांश

अनेकता में एकता सिर्फ कुछ शब्द नहीं है बल्कि यह बात भारत जैसे सांस्कृतिक और विरासत में समृद्ध देश पर पूरी तरह लागू ही होती है। भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन और समृद्ध संस्कृति है जो आदिकाल से ही अपनी परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर अमर बनी हुई है। इसकी उदारता तथा समन्वय वादी ने अन्य संस्कृतियों को समाहित किया है किंतु अपने अस्तित्व की मूल को सुरक्षित रखा है। भारतीय संस्कृति के कैनवास का आकार विशाल है और उस पर हर प्रकार का रंग और जीवंतता है। इसके विभिन्न रंग इसकी विविधता में दिखाई पड़ते हैं जैसे धर्म परंपरा कला संगीत इत्यादि। संगीत भारतीय संस्कृति का अहम अंग है फिर वह चाहे शास्त्रीय हो , उपशास्त्रीय हो , या लोक संगीत हो। भारतीय गांव में प्रचलित संगीत को ही लोक संगीत कहा जाता है। लोक संगीत की पृष्ठभूमि का अध्ययन मुख्यता जनसामान्य के जीवन से जुड़े हुए विभिन्न कार्य है। प्रायः लोक संगीत उतनी ही प्राचीन मानी जाता है जितनी की प्राचीन हमारी भारतीय संस्कृति है।

मुख्य शब्द : भारतीय संस्कृति , लोक संगीत।

प्रस्तावना

किसी भी देश या भू–खण्ड पर रहने वाली मानव जाति द्वारा प्रयोग में लाई गई दर्शन, धर्म, संस्कार, सभ्यता, कला, भाषा, वस्त्र व जीवन दर्शन हो उसकी संस्कृति कहलाती है।

विश्व के किसी भी देश की सभ्यता के आंकलन में उस देश की संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारत, विश्व का एकमात्र देश है जहां सबसे अधिक भाषाएं, धर्म, कला, विचार, जीवन व दर्शन के रंग मिलते है। भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है इसकी विविधता और अनेकता में एकता की भावना जो विश्व में कहीं नहीं मिलती है और भारतीय संस्कृति के लिए अनमोल है। इतना ही अनमोल इसके लिए भारतीय संगीत भी रहा है। जब–जब हम संस्कृति की बात करते है तो इसमें संगीत व कला स्वयं ही निहित रहते है।

भारतीय संस्कृति में कथा, लोक गीत, लोकगाथा, वीर गाथा, ईश्वर स्तुति व देत कथाएं इसी संस्कृति की धरोहर का प्रतिबिम्ब है।

भारतीय संस्कृति में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि भारत में जीवन से लेकर मृत्यु तक के सभी संस्कारों व तीज–त्योहारों में संगीत का प्रयोग किया जाता है। सभी स्थानों पर सुख–दुःख, प्रेम, कष्ट जो प्रकट करने के लिए भी संगीत का प्रयोग किया जाता है। भारत के सभी क्षेत्रों में लगभग हर चालीस मील के बाद भाषा व संगीत की भूमि बदल जाती है जो भारतीय संस्कृति व संगीत की विविधता और विशालता को स्पष्ट करती है।

भारतीय संस्कृति की सीमा अत्यंत विशाल है और वृहद है जिसका अनुमान लगाना कठिन है। इसी के अंतर्गत लोक संस्कृति भी शामिल जो इसका अभिन्न अंग है। लोक संस्कृति का अर्थ शिष्य साहित्य से भिन्न अस्तित्व रखते हुए असभ्य, अशिक्षित, अर्द्धसभ्य ग्राम्य आदि प्रकार के जन समूहों की संस्कृति का बोध कराता है। साधारणतः लोक संस्कृति का अर्थ सहज, साधारण एवं प्राकृतिक धारा की भांति अकृत्रिम बनावटों से दूर रखने वाली संस्कृति को बोध कराती हैं।

लोक संस्कृति की झांकी लोक साहित्य में देखी जा सकती है। लोक साहित्य को पांच भागों में विभक्त किया गया है–लोक गीत, लोक गाथा, लोक कथा, लोक नाट्य, लोक सुभाषित। लोक साहित्य केवल दो शब्दों ''लोक'' व ''साहित्य'' का संगम नहीं है अपितु लोक साहित्य के अन्तर्गत भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं जैसे–धार्मिक व सामाजिक आदि का सार छुपा रहता है, जिसका बोध हमें लोक गीतों के माध्यम से होता है।

लोक गीत लोक साहित्य की सबसे प्रधान तथा लोकप्रिय विधा है। यदि संक्षेप में कहे तो लोक संस्कृति, लोक साहित्य व लोक गीत ना केवल एक दूसरे से जुड़े है बल्कि एक दूसरे से प्रभावित भी रहते हैं।

लोक गीत वे गीत है जिन्हें सामान्य जनता अपने कण्ठ का हार बनाये रहती है। भारत के लोक गीतों की परम्परा प्राचीन है। संसार में मानव के आर्विभाव के साथ हो लोकगीतों का उद्‌गम माना जाता है। लोकगीतों के जन्म की कोई निर्धारित काल रेखा नहीं है। इसकी प्राचीनता के संबंध में पं0 रामनरेश त्रिपाठी जी कहते है–जब से पृथ्वी पर मनुष्य है तब से गीत भी हैं। जब तक मनुष्य रहेंगे तब तक गीत भी रहेंगे। मनुष्यों की भांति गीतों का भी जीवन मरण चक्र चलता रहता है।'' पूर्णिमा श्रीवास्तव लोकगीत को परिभाषित करती हुई कहती है–'लोक गीत नदी की उस धारा के समान है जो ग्रामीण संस्कृति के गर्भ से निकलकर ना केवल ग्रामीण समाज को आप्लावित करती है वरन् वह अपने शीतल वाणी रूपी जल से समग्र मानव समाज वाले कंकड़, पत्थर और गंदगी को जिस प्रकार से नदी की धारा बहा ले जाती है उसी प्रकार से ग्रामीण जन भी इन गीतों के द्वारा अपने जीवन को विषमताओं और दुःखों को भुला देते है।

लोक गीत की परम्परा भारत में बहुत प्राचीन है। लोक गीतों का प्रथम चरण–चिन्ह वैदिक ग्रंन्थों में मिलते है। पुत्र–जन्म, यज्ञोपवीत तथा विवाह आदि उत्सवों पर सरस गीत गाए जाने का उल्लेख इनमें मिलते है। इन गीतों के लिए वेद में ''गाथा'' शब्द का प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त रामायण में राम जन्मोत्सव पर गांधर्वो द्वारा गायन और अप्सराओं द्वारा नृत्य करने का उल्लेख तत्कालीन लोकगीतों के विकास की परम्परा को दृष्टिगोचर करता है। अतः यह स्पष्ट है कि लोकगीतों का अस्तित्व बहत प्राचीन समय से भारतीय संस्कृति व संगीत में उपस्थित है।

लोक गीतों के महत्व को बताते हुए मि0 राल्फ विलियम्ज ने कहा है–''लोक गीत न पुराना है न नया, वह तो जंगल के एक वृक्ष के समान होता है जिसकी जड़े तो धरती में दूर तक (भूतकाल में) धंसी हुई होती है किन्तु जिसमें नित्य नयी–नयी डालियाँ, पल्लव और फूल लगते रहते हैं।''

लोक गीतों की उत्पत्ति किसी जाति अथवा सामूहिक रीति से नहीं होती अपितु लोक समाज में ही किसी व्यक्ति विशेष की साधारणा अभिव्यक्ति के फलस्वरूप होती है। लोकगीत मौखिक परम्परा में ही विकसित हुये है। इनके रचयिता मूल रूप से अशिक्षित नर नारी है जो अपने कार्य की व्यस्तता के दौरान सहज ही शब्द से पंक्ति और पंक्ति से पंक्ति की जोड़कर गीत की रचना कर देते है। इनकी समाज की परिस्थितियों इनकी क्लवेर रूप होती है। लोगगीतों की प्रमुख विशेषता प्रथम पंक्ति की बार–बार पुनरावृत्ति करना है जो गीतों को और सौन्दर्य प्रदान करता है। इनमें शब्दों की अपेक्षा भावना को प्रधानता दी जाती है।

लोक गीतों के महत्व को समझने के लिए इन्हें पांच प्रमुख भागों में बांटा गया है–

संस्कार संबंधी गीत

भारतीय जीवन में धर्म का प्रमुख स्थान है। भारतीय लोगों का धर्म ही प्राण है। जन्म के पहिले से होकर मृत्यु के बाद तक कई संस्कारों पर गीत गाने की परम्परा रही है। इन संस्कारों में पुत्र जन्म, मुण्डन, यज्ञोपवीत, विवाह, गवना, मृत्यु इत्यादि संस्कार आते है। जिनकी विशेषताओं को स्त्री पुरुष मिलकर इन लोक गीतों के माध्यम से प्रदर्शित करते है।

ऋतुओं और व्रत संबंधी गीत

लोकगीतों की रचना में किसी न किसी व्रत या त्यौहार का वर्णन रहता है। जैसे वर्षा वसंत आदि ऋतुओं के आने पर जीवन में उल्लास आता है। जिसकी अभिव्यक्ति लोकगीतों द्वारा होती है। वर्षा ऋतु में किसान आल्हा, सावन में महिलायें कजली, फागुन के माह में होली या फागुन के गीतों द्वारा अपने मन के भावों को प्रकट करती है।

इसी प्रकार विभिन्न व्रतों जैसे छष्ठी, नागपंचमी, गोधन आदि पर भी लोक गीत गाये जाते है।

देवता संबंधी गीत

भारत में विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के भिन्न–भिन्न देवी–देवता विद्यमान है। इनकी स्तुति में गीत गाये जाते है जिनके माध्यम से लोग अपनी आस्था को प्रकट करते है। राम, कृष्ण, हनुमान, गंगा माता संबंधी गीत इस कोटि में आते हैं।

जातियों से संबंधी गीत

कुछ लोकगीतों का प्रचलन कुछ प्रमुख जातियों के नाम से होता है जैसे–अहीरों, कहारों, धोबियों के गीत। इन गीतों में इनकी जीवन शैली व कार्यों का वर्णन रहता है।

श्रम संबंधी गीत

कुछ गीत जो किसी विशेष कार्य से जुड़े होते है वो श्रम संबंधी गीत कहलाते है। उदाहरण के लिए–रोपनी, सोहनी, चरखा, कोल्हू इत्यादि।

लोक गीतों का महत्व किसी विशेष संस्कार, पर्व या उत्सवों पर ही नहीं है बल्कि मानव जीवन के प्रत्येक क्षण, सुख दुख से संबंधित है क्योंकि ये लोगों में प्रचलित है और लोगों द्वारा ही प्रचलित किया गया है। भारतीय संस्कृति का परिचय इन लोकगीतों द्वारा होता है।

इन लोकगीतों की धारा आज भी निरंतर, निर्विध्न, निर्विकार रुप से सहज एक कण्ठ से दूसरे कण्ठ में प्रवाहित होते हुए बह रही है जिन्हें सुनकर ग्रामीण समाज के रीति–रिवाज, उनकी दिनचर्या, उनकी आर्थिक विषमता, उनकी उल्लास सभी श्रोताओं के समक्ष आने लगता है। इस प्रकार लोकगीत प्राचीन से आधुनिक पीढ़ी के मध्य सूत्रधार के रूप में भारतीय संस्कृति का अंग है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य भारतीय संस्कृति और लोक संगीत के अंतर्संबंध और महत्व पर प्रकाश डालना है।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत लेख के लेखन के लिए उपलब्ध साहित्य का अवलोकन किया गया है। इसमें प्रमुख रूप से पुस्तकों तथा पत्रिकाओं की सहायता ली गई है।

अनुसंधान रेखा चित्र

प्रस्तुत लेख के लेखन में सिद्धांत विधि का उपयोग किया गया है जिसका स्त्रोत अनेक विश्वसनीय स्तर की पुस्तकें, पत्रिकाएं तथा ऑनलाइन वेबसाइट्स है।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति और लोक संगीत एक दूसरे के पूरक हैं अर्थात एक ओर जहां संस्कृति की झलक को संगीत के माध्यम से दिखाया जाता है वहीं दूसरी ओर लोक में प्रचलित संगीत वहां की संस्कृति का दर्शन कराता है। अतः जितनी समृद्ध हमारी संस्कृति होगी उतना ही समृद्ध हमारा लोक संगीत भी होगा। हमें निरंतर लोक संगीत के महत्व को बनाए रखने के लिए प्रयास करना चाहिए ताकि भारतीय संस्कृति और लोक संगीत दोनों की परंपरा जीवंत रहे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

वेदालंकार हरिदत्त भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त इतिहास एंड पब्लिशर्स एमएन पब्लिशर्स एंड डिसट्रीब्यूटर्स 2001

कृपाशंकर भारतीय संस्कृति का प्रवाह राजकमल प्रकाशन

उपाध्याय डॉ कृष्ण देव लोक संस्कृति की रूपरेखा लोक भारत प्रकाशन 2009

परमहंस सतीश भारतीय लोकगीत सहयोग प्रकाशन 2003

लोक संगीत अंक संगीत कार्यालय हाथरस 1966

सिंह डॉ उषा संगीत शतायु साहित्य संगम